ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2019; 5(11): 284-287
www.allresearchjournal.com
Received: 18-09-2019
Accepted: 24-10-2019

डॉ0 कुलदीप
सहायक प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, मदरहुड विश्वविद्यालय, रूड़की, उत्तराखंड, भारत

Corresponding Author:
डॉ0 कुलदीप
सहायक प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, मदरहुड विश्वविद्यालय, रूड़की, उत्तराखंड, भारत

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 कुलदीप

सारांश
माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा की तुलना की क्या स्थिति है यह जानने विषयक प्रस्तुत शोध कार्य को कक्षा 9 व 10 के 150 विद्यार्थियों पर संपन्न किया गया। तुलना करने के कई बिंदुओं पर गौर किया गया जैसे ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा, लिंग के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा व विज्ञान एवं कला वर्ग के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन। निष्कर्ष रूप में पाया गया है कि ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा स्तर शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा कम प्रभावी वह संतोषजनक पाई गई है। छात्रों की अपेक्षा छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि उच्च पाई गई है तथा विज्ञान व कला वर्ग के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में सामान्य अंतर पाया गया है।

कूटशब्द : माध्यमिक, अध्ययनरत, विद्यार्थियों, शैक्षिक, अभिप्रेरणा

प्रस्तावनाः
शिक्षा एक महत्वपूर्ण और सर्वव्यापी विषय है। यह मानव की एक विशेष उपलब्धि है। अतीतकाल से मनुष्य ने जागरुक रहकर अपनी वॉक शक्ति का और व्यक्ति और व्यक्ति के बीच, समुदाय और समुदाय के बीच, तथा संतति और संतति के बीच अपने व्यावहारिक अनुभव भंडार का संचार करने के लिए उपयोग किया है। इनमें प्राकृतिक घटनाओं, नियमों, विधि निषेध की संकेत भाषा का उपयोग है ताकि व्यक्तिक स्मृति के माध्यम से पूरी जाति जीवित रहसके। शिक्षा एक सामाजिक विकास की आवश्यकता है। समुदाय की स्वभाविक विशेषता रही है। उसने सामाजिक विकास के हर युग में समाज को दिशा और स्वरूप देने में सहायता की है। स्वयं शिक्षा का विकास काफी अवरुद्ध नहीं हुआ। मनुष्य के सर्वोच्च आदर्शों को इसने प्रवाहित किया है। मार्ग को भी शिक्षा ने काफी सच्चाई से अंकित किया है, जिसमें कुछ युग उत्थान के हैं, कुछ पतन के हैं, कुछ संघर्ष के हैं, और कुछ संतुलन और बिखराव के हैं। शिक्षा का प्रारंभ बेसिक विद्यालय से होता है इसलिए यह आवश्यक है कि हमारे देश में शिक्षा की व्यवस्था करने वाली सरकारें बेसिक विद्यालय के उचित संगठन तथा संचार की ओर विशेष ध्यान दें। विद्यालय समाज का लघु रूप है। जिस प्रकार समाज में विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले लोग तथा अलग–अलग धर्म मानने वाले लोग रहते हैं। उसी प्रकार विद्यालय में अध्ययन हेतु आने वाले विद्यार्थियों का सामाजिक आर्थिक स्तर तथा जाति धर्म आदि विभिन्न होते हैं विद्यालय में अध्ययन करने वाले प्रत्येक छात्र दिखने में स्मार्ट लगते हैं लेकिन गुणों के आधार पर परस्पर भिन्न होते हैं गुणों में भिन्नता के कारण उनकी विद्यालय में शैक्षणिक उपलब्धि में भी भिन्नता पाई जाती है।

छात्र की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर निम्न होता है। जिसके आधार पर शिक्षक उसका आकलन करते हैं शिक्षक आकलन के आधार पर ही योजनाएं बनाते हैं। नई योजनाओं के आधार पर शिक्षण कार्य करने पर छात्रों को उसकी सामग्री के अनुसार शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने में सफल होता है। छात्र की शैक्षिक उपलब्धि को उसकी सफलता ,रुचि ,अध्ययन की आदत, वातावरण आदि अनेक कारक प्रभावित करते हैं। इसलिए एक शिक्षक के लिए यह परम आवश्यक है कि शिक्षण योजनाएं बनाते समय शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों का ध्यान रखें। इस प्रकार से शिक्षा ही वह साधन है जिसके माध्यम से शैक्षिक सामाजिक और मनोवैज्ञानिक प्रगति को सुनिश्चित किया जा सकता है। शिक्षा के द्वारा ही बालक का संतुलित एवं सर्वाधिक विकास होता है। आधारशिला शिक्षा ही है। किसी भी जाति समाज देश तथा देश की उन्नति उसकी शिक्षा पर ही निर्भर करती है।इस शिक्षा हर किसी के जीवन में सफल होने के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण उपकरण है।

इससे जीवन की चुनौतियों को कम करने में बहुत ही मदद मिलती है। मुश्किल जीवन में शिक्षा अवधि के दौरान प्राप्त ज्ञान के किसी को उनके बारे में आश्वस्त करता है।

शिक्षा जीवन में बेहतर संभावनाओं को प्राप्त करने के अवसरों के लिए विभिन्न दरवाजे खोलती है। सभी को जीवन में आगे बढ़ने और सफलता प्राप्त करने के लिए बेहतर शिक्षा बहुत जरूरी है। यह आत्मविश्वास विकसित करती है और एक व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में मदद करती है औपचारिक शिक्षा हर किसी के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। संपूर्ण शिक्षा को तीन विभागों में विभाजित किया गया है। बेसिक,माध्यमिक और उच्च माध्यमिक। शिक्षा के इन तीन विभागों में बेसिक शिक्षा का महत्व सर्वाधिक है क्योंकि बेसिक शिक्षा ही वह आधार है जिस पर बालक का पूरा जीवन निर्भर करता है। जब बालक विद्यालय में औपचारिक रूप से शिक्षा प्राप्ति के लिए जाता है, तो विद्यालय में उसके व्यक्तित्व निर्माण में शिक्षक का महत्व पूर्ण स्थान होता है जो विद्यार्थियों का मार्गदर्शन कर उनकी आंतरिक प्रतिभाओं का विकास करते हैं। विद्यालय के वातावरण और साथ ही समूह के संपर्क में रहकर बालक जो कुछ सीखता है या जिन विषयों का अध्ययन करता है उसकी जांच परीक्षा प्रणाली के आधार पर की जाती है। जिससे बालक का शैक्षिक स्तर पता चलता है। बालक की शिक्षा लक्ष्य आधारित होती है उसी के आधार पर वह अपने अध्ययन योजना बनाता है।

शैक्षिक उपलब्धि–

आज व्यक्ति के जीवन में व्यक्तिक भिन्नता का ज्ञान,हमने किसी कार्य को कितना सीखा इसका ज्ञान उपलब्धि के द्वारा होता है।मनोविज्ञान के परीक्षणों की श्रृंखला के प्रयोग मे आन वाली उपलब्धि का शैक्षणिक जीवन में अत्यंत महत्व है विद्यार्थी के चयन,उन्नति एवं तुलनात्मक अध्ययन आदि में इस परीक्षण का प्रयोग किया जाता है। शैक्षिक उपलब्धि विद्यालयों के विषय संबंधी अर्जित ज्ञान का परीक्षण है। शैक्षिक उपलब्धि का अर्थ ज्ञान प्राप्त करना एवं कौशल का विकास करना है । शैक्षिक उपलब्धि कामहत्व प्रत्येक शिक्षण कार्य में अत्यंत आवश्यक है इससे विद्यार्थी के बौद्धिक स्तर के ओपिनियन का पता चलता है। शैक्षिक उपब्धि के अर्थ एवं भाव को अधिक स्पष्ट करने के लिए विभिन्न विद्वानों ने परिभाषाएं दी है जो इस प्रकार हैं–

गैरिसन– "शैक्षिक उपलब्धि बालक की वर्तमान योग्यता या किसी विशिष्ट विषय के क्षेत्र में उसके ज्ञान की सीमा का मापन करती है"

चार्ल्स स्किनर– "कार्य का अंतिम परिणाम है शैक्षिक उपलब्धि है जो विद्यार्थियों के सीखने के बारे में जानकारी प्राप्त करता है।"

उपरोक्त परिभाषा ओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि उपलब्धि में हैं जिनकी सहायता से स्कूल में पढ़ाई जाने वाले विषयों और सिखाए जाने वाले कौशलों में विद्यार्थियों की सफलता अथवा उपलब्धि का ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

अभिप्रेरणा– प्रेरणा मनुष्य की दैनिक अनुभव का विषय है। प्रेरणा हमें कहीं से भी मिल सकती है–कर्तव्य बोध से, अपनों के प्रति स्नेह के कारण, अपने मन की शांति व सुख के कारण, अथवा प्रभु के प्रति समर्पण की भावना से। अकेला मनुष्य उठ जाता है, वह संसार की झंझट ओ से तंग आ जाता है। वह चाहता है कि कोई उसे प्रेरणा दे तो कोई कंधे पर हाथ रखकर उसकी पीठ थप–थपाएं। कार्य सरल होना कठिन बिना प्रेरणा के नहीं हो सकता। सामर्थ्य होने के बाद जितनी प्रेरणा जबरदस्त होती है काम उतनी ही तेजी से होगा। केवल अनुभव में ही नहीं व्यवहार में भी प्रेरणा का महत्वपूर्ण स्थान है। अभिप्रेरणा छात्र के व्यवहार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अभिप्रेरणा चरित्र निर्माण में भी सहायक होती है। अभिप्रेरणा ध्यान केंद्रित करने में व्यक्ति की सहायता करती है और प्रेरणा हमारे व्यवहार में विविधता लॉकर लक्ष्य प्राप्ति में सहायता प्रदान करती है। प्रेरणा हमारे व्यवहार में निरंतरता बनाए रखती है और हम तब तक अपने प्रयासों में कमी नहीं लाते जब तक कि हमारा लक्ष्य प्राप्त नहीं हो जाता। अतः अभिप्रेरणा के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए हमें इसकी अर्थ को समझना होगा जो इस प्रकार से है–

अभिप्रेरणा शब्द को अंग्रेजी के Motivation/Inspiration के समान अर्थी के रूप में प्रयोग किया जाता है। मोटिवेशन शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के' मोटम' से हुई है। जिसका अर्थ है–ज्व उवअम अर्थात गति प्रदान करना। इस प्रकार अभिप्रेरणा वह कारक है जो कार्य को गति प्रदान करता है। अतः प्रेरणा एक सक्रिया होती है। जो जी को क्रिया के प्रति उत्तेजित करती है। जब हमें किसी वस्तु की आवश्यकता होती है तो हमारे अंदर एक अच्छी इच्छा उत्पन्न होती है। इसके फलस्वरूप उर्जा उत्पन्न हो जाती है जो प्रेरक शक्ति को गतिशील बनाती है। अतः अभिप्रेरणा के द्वारा व्यवहार को दृढ़ किया जा सकता है। अभिप्रेरणा को कुछ इस तरह से परिभाषित किया जा सकता है।

थॉमसन के अनुसारः– "अभिप्रेरणा विद्यार्थी में रुचि उत्पन्न करने की कला है ऐसी रुचि जो या तो छात्र में है ही नहीं या इस रुचि का उसे आभास ही नहीं है।"

गुडके अनुसारः– "अभिप्रेरणा क्रिया को आरंभ करने,जारी रखने एवं नियंत्रित करने की प्रक्रिया है।"

स्किनर के अनुसारः– "प्रेरणा सीखने के लिए राजमार्ग है।"

अभिप्रेरणा के प्रकारः–

अभिप्रेरणा निम्नलिखित प्रकार की होती है–

1. प्राकृतिक अभिप्रेरणाः– प्राकृतिक अभिप्रेरणा में मनोदैहिक,सामाजिक,व्यक्तिगत आदि अभिप्रेरणाऐ आती हैं।
2. कृत्रिम अभिप्रेरणाः–कृतिम अभिप्रेरणा में दंड एवं पुरस्कार,सहयोग,लक्ष्य ,परिपक्वता ,फल का ज्ञान,व्यक्तिगत तथा सामूहिक प्रेरणा आदि आती है।

प्रेरणा के लिए आवश्यकता एक महत्वपूर्ण प्रेरक है । यदि आवश्यकता बड़ी तेज हुई तो पुरानी अनेक बाधाओं को पार करके उसे पूरा करने का प्रयत्न करता है। मानव की प्रत्येक क्रिया की तहत से अभिप्रेरणा किसी न किसी रूप में उपस्थित रहती है। अभिप्रेरणा मनुष्य की जन्मजात रूचि पर निर्भर करती है। विद्यार्थियों में अभिप्रेरणा के अंतर्गत पाठ्यवस्तु तथा किया उसे छात्रों को स्वयं प्रोत्साहन मिलता है। जैसे–जब विद्यार्थी को विज्ञान के विषयों के अध्ययन में आनंद आता है तो वह प्राकृतिक रूप से अभिप्रेरित होता है। विद्यार्थियों को उसकी उन्नति या प्रयत्नों के परिणाम का ज्ञान देना अति आवश्यक होता है। इस प्रकार का ज्ञान विद्यार्थियों में जिज्ञासा का संचार करता है और वह कार्य करने के लिए प्रेरित रहता है।

अभिप्रेरणा के पद या स्रोतः– मुख्य रूप से अभिप्रेरणा के निम्नांकित 4 स्रोत है–

1. आवश्यकता
2. चालक
3. प्रोत्साहन
4. प्रेरक।

अभिप्रेरणा अधिगम का आवश्यक अंग है इसके द्वारा किसी क्रिया को सीखने के लिए बालक में उत्साह उत्पन्न किया जा सकता है। अध्यापक का कार्य नवीन ज्ञान से छात्रों को परिचित करवाना है। अध्यापक के समक्ष सदैव यह प्रशन रहा है कि उस ज्ञान का

परिचय विद्यार्थियों को कैसे कराएं इन सभी प्रश्नों का उत्तर अभिप्रेरणा से मिलता है।

शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा,–अभिप्रेरणा से संबंधित नए विचारधारा का नाम है। जब कोई व्यक्ति किसी कार्य को करता है तो वह उस कार्य में अधिकतम उपलब्धि प्राप्त करना चाहता है अर्थात कठिन कार्य करते हुए या चुनौतीपूर्ण कार्य करते हुए प्राप्त उपलब्धि ही' उपलब्धि अभिप्रेरणा' है । उपलब्धि अभिप्रेरणा की प्रकृति व्यक्तिगत होती है अर्थात यह एक व्यक्ति के व्यक्तिगत क्रियाकलापों पर आधारित होती है। किसी भी कार्य की उपलब्धि के लिए कार्य करने की अभिप्रेरणा ही उपलब्धि अभिप्रेरणा कहलाती है। उपलब्धि अभिप्रेरणा में व्यक्ति कठिन से कठिन कार्य कर सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि हासिल करने हेतु प्रयासरत रहता है।
मैकली लैड उपलब्धि अभिप्रेरणा को स्पष्ट करते हुए कहा है कि'व्यक्ति जिसे चाहता है उसे प्राप्त करने के लिए अपनी सारी ताकत लगा देता है और परिणाम स्वरूप उसे जो उपलब्धि प्राप्त होती है वही उपलब्धि प्रेरणा है तथा व्यक्ति उसी से संतुष्टि प्राप्त करता है। इस प्रकार व्यक्ति अपने अभूतपूर्व क्रिया को करके उपलब्धि हासिल करता है।
मैक डेविड के अनुसारः– "मनोवैज्ञानिक निर्देशन की उस प्रणाली को उपलब्धि अभिप्रेरणा कहते हैं, जिसे मानवीय क्रिया क्षमता,आक्रमण शीलता तथा प्रभुता के साथ संबंधित हो।"
उपलब्धि अभिप्रेरणा एक ऐसी छिपी हुई विशेषता होती है जो प्रत्यक्ष प्रयासों से ही स्पष्ट होती है जब व्यक्ति अपने कार्य को व्यक्तिगत रूप से कुछ पाने का साधन समझता है। उपलब्धि अभिप्रेरणा के द्वारा व्यक्ति अपने पास में होने वाली वस्तुओं की प्राप्ति के लिए उन्मुख होता है।

शोधउद्देश्य

1. माध्यमिक स्तरपर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों का लिंग के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों का विज्ञान या कला वर्ग के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन।
4. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पनाः

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों ने ग्रामीण व शहरी स्तर के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. लिंग के आधार पर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में विज्ञान व कला के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि– शोध अध्ययन हेतु शोधकर्ता द्वारा शोध विधि के लिए वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्शचयन विधिः–
न्यादर्श –प्रस्तुत शोध समस्या के न्यादर्श के चुनाव हेतु स्तरित यादृच्छिक न्यादर्श विधि का चयन किया है।

शोध उपकरण –शोध के उद्देश्य की दृष्टि से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा के अध्ययन हेतु डा० टी० आर० शर्मा द्वारा निर्मित एकेडमिक अचीवमेंट मोटिवेशन टेस्ट का प्रयोग किया है।

शोध सीमांकन–

1. यह शोध कार्य उत्तरप्रदेश राज्य तक ही सीमित किया गयाहै।
2. इस शोध कार्य में सहारनपुर संभाग को सम्मिलित किया गया है।
3. यह शोध 9वी, 10वीं कक्षा में पढ़ने वाले विद्यार्थियों तक ही सीमित है।
4. विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का अध्ययन करने के लिए 150 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

प्रदत्त विश्लेषण व व्याख्या–
1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों ने ग्रामीण व शहरी स्तर के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी संख्या–1: ग्रामीण व शहरी स्तर के आधार पर शैक्षिक अध्ययनरत

समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानकविचलन	टी– मान	सार्थकतास्तर
ग्रामीण	75	20.54	5.17	0.20	0.05
शहरी	75	23.16	6.37		

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्यमानो के अंतर का टी –अनुपात का मान 0.20 है जोकि सार्थक स्तर .05 तथा मुक्ताश 148 के सारणी 1.98 से कम है अर्थात मध्यमानों में सार्थक अंतर है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है अर्थात माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

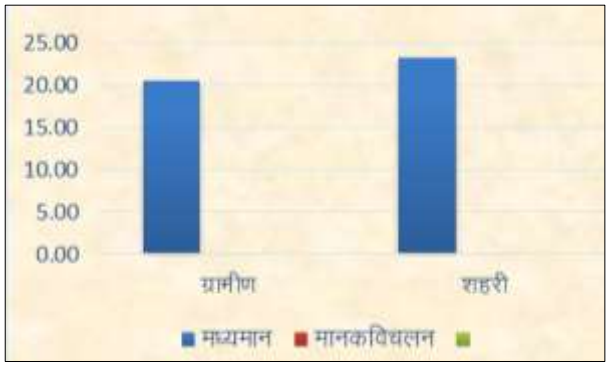

चित्र 1: ग्रामीण व शहरी

2. लिंग के आधार पर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी संख्या–2: लिंग के आधार पर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत

समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानकविचलन	टी– मान	सार्थकतास्तर
छात्र	80	23.49	4.59	3.16	0.05
छात्रा	70	26.77	4.43		

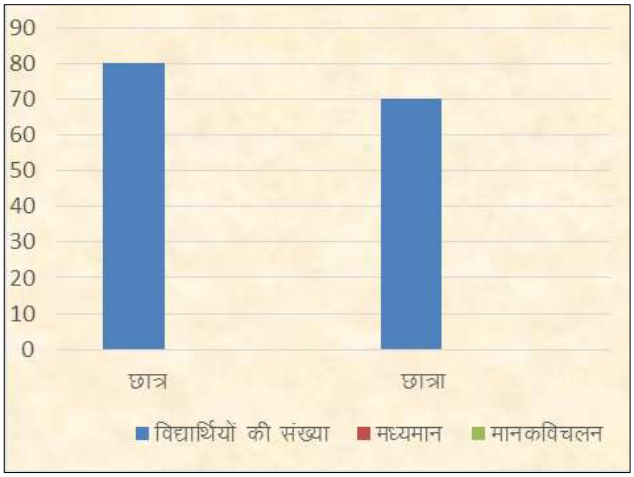

चित्र 2: लिंग के आधार

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्यमानो में अंतर का टी–अनुपात का मान 3.16 है जो कि सार्थक स्तर.05 तथा मुक्ताश 148 के सारणी मान 1.98 से अधिक है अर्थात मध्यमान में सार्थक अंतर है अतः शून्य परिकल्पना निरस्त होती है अर्थात माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर है अर्थात छात्रों की उपेक्षा छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा उच्च है।

3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में विज्ञान व कला के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी संख्या–3: विद्यार्थियों में विज्ञान व कला के आधार पर शैक्षिक अध्ययनरत

समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानकविचलन	टी–मान	सार्थकतास्तर
कला	80	25.29	5.04	1.15	0.05
विज्ञान	70	24.04	3.60		

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है की माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्यमान के अंतर का टी–अनुपात का मान 1.15 है जो कि सार्थकता स्तर. 05 तथा मुक्तांश 148 के सारणीमान 1.98 से कम हैं अर्थात मध्यमान में असार्थक अंतर है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है अर्थात कला वर्ग तथा विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

चित्र 3: विज्ञान व कला

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष निम्नलिखित हैं–

विद्यार्थियों द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देने, उनकी आवश्कता की पूर्ति, कक्षा में स्पष्ट भाषा प्रयोग करने, कक्षा में अनुशासनात्मक व्यवहार एवं अधिगम वातावरण का निर्माण करने से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है।

1. माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है। ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों का पढ़ाई का स्तर शहरी विद्यालय की अपेक्षा कम प्रभावी तथा संतोषजनक पाया गया है।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में लिंग के आधार पर उनकी शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर पाया गया। छात्रों की उपेक्षा छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा उच्च है। विद्यालयों में आवश्यकता अनुसार शिक्षण नीति में परिवर्तन, शिक्षण सामग्री में भी वृद्धि हुई जिससे शिक्षण कार्य प्रभावशाली रहा।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में विज्ञान वर्ग एवं कला वर्ग के आधार पर उनकी शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

संदर्भ

1. शर्मा अनुराधा (2009) माध्यमिक स्तर पर अभिभावक प्रोत्साहन का विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।
2. सोनी पवन कुमार (2010) उच्च माध्यमिक स्तर के उच्च शैक्षिक उपलब्धि तथा नेम शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।
3. प्रजापति सुनीता (2010) माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का अध्ययन एवं आदतों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
4. दूबे भावेश चंद्र (2011) विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शैक्षिक अभिप्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन।
5. कुमार दुर्गेश (2011) बी.एड.प्रशिक्षणार्थियों द्वारा शिक्षण अभ्यास के दौरान अपनाए जाने वाले शिक्षण को श्लोका छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
6. सिंह एवं बघेल(2017) किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।